Kaivalya Education Foundation

गीत पुस्तिका

चेतनागीत

बालगीत / कविताएं

English Poems

चयन और संकलन

राजेन्द्र सिंह

INDEX

S.N.	Title	page no.	S.N	Title	Page no.
चेतनागीत			24	जैसे चांद आकर.....	24
1.	इसलिए राह संघर्ष की चुनें...	1	25	पेड़ लगायें ऐसा.....	25
2.	आपको सलाम मेरा सबको....	2	26	रामू जंगल में गया.....	26
3.	पंखों में आकश समेटे.....	3	27	छुइमुई निदिया.....	27
4.	अबतो मजहब कोई ऐसा.....	4	28	झोंपड़ी झरनों मे बहती.....	28
5.	शपथ लेना तो सरल है.....	5	29	एक छोटा सा तोता रे.....	29
6.	सौ में सत्तर आदमी.....	6	30	हरा समन्दर गोपी चंदर.....	30
7.	घर–घर अलख जगायेंगे....	7	31	मोटूराम हलवाई.....	31
8.	मैं तुमको विश्वास दूं.....	8	32	गाडो ज्वार को.....	32
9.	चलो के तेज हम चलें.....	9	33	एक बुढ़िया ने बोया दाना.....	33
10	मजदूर तेरी छान में.....	10	34	आओ हम को सब बतलाओ...	34
11	किसी के काम जो आये.....	11	35	श्रामूजी की टोपी.....	35
12	मशालें लेकर चलना.....	12	36	जीरा भात.....	36
13	हर पल आगे बढ़ना है.....	13	**English Poems**		
14	कदम अपना आगे बढ़ाता.....	14	37	Hands on my hands……	37
बालगीत / कविताएं			38	A little tea pot….. & Elephant is so big……	38
15	पीला पतंगयानी पांखो (गुजराती)	15	39	Rain on the grsss & Head and shoulder….	39
16	टमे गोवाणियां..(गुजराती)	16	40	Mulberry bush……	40
17	लकड़ी की काठी.....	17	41	To be healthy & Dicky birds	41
18	छोटे मामाजी के घर.....	18	42		
19	नानी तेरी मोरनी को.....	19	43		
20	इन्दर राजा पानी दे.....	20	44		
21	कागज की गुड़िया के.....	21	45		
22	बागों में है फूल खिले.....	22	46		
23	आसमान को हरा बनादे.....	23	47		

इसलिए राह संघर्ष की चुने.....

इसलिए राह संघर्ष की हम चुने, जिन्दगी आंसओं में नहाइ न हो,

शाम सहमी न हो रात हो न डरी, भोर की आंख फिर डब–डबाइ न हो

इसलिए.....

सूर्य पर बादलों का न पहरा रहे, रोशनी रोशनाई में डूबी न हो,

यूं न ईमान फुटपाथ पर हो खड़ा, हर समय आत्मा सबकी ऊबी न हो,

आसमां में टंगी हो न खुशहालियां, कैद महलों में सबकी कमाई न हो।

इसलिए.....

कोई अपनी खुशी के लिए गैर की, रोटियां छीनले हम नही चाहते,

छींट कर थोड़ा चारा कोई उम्र का हर खुशी बीन ले हम नही चाहते,

हो किसी के लिए मखमली बिस्तरा, और किसी के लिए एक चटाई न हो।

इसलिए.....

अब तमन्नाएं फिर न करे खुदखुशी, ख्वाब पर खौफ की चौकसी न रहे,

श्रम के पावों में होना पड़ी बेड़ियां शक्ति की पीठ अब ज्यादती न सहे,

दम न तोड़ कही भूख से बचपना, रोटियों के लिए फिर लड़ाई न हो ।

इसलिए राह संघर्ष की हम चुने, जिन्दगी आंसुओं में नहाई न हो

शाम सहमी न हो रात हो न डरी भोर की आंख फिर डब–डबाई न हो।

इसलिए– इसलिए।

आदमी.....

आपको सलाम मेरा सबको राम–राम,

रे अब तो बोल आदमी का आदमी है नाम–2

हम गगन तले पले धरा के पूत हैं,

अग्नि बीज प्राण सलिल पंच भूत हैं,

आत्मा अजर अमर है पंच भूत की,

मानवी करुण कथा का एक सूत है,

हम चमन के फूल हैं हमारा एक धाम,

रे अब तो बोल आदमी का आदमी है नाम–2

आपको सलाम..... /

इस धरा पे आदमी है ये कमाल है,

इस धरा पे आदमी तो बेमिसाल है,

जो धरा का प्राण है धरा का धर्म है,

आदमी तो आदमी है क्यों सवाल है,

आपके रहीम हैं तो आपके हैं राम,

रे अब तो आदमी का आदमी है नाम–2

आपको सलाम..... /

न्याय की पुकार का गला तो रुंध है,

शब्द बाण भोथरे हैं धार कुन्द है,

वक्त का सवाल है जवाब कौन दे,

भारती की आरती में साफ धुन्ध है,

ये आदमी रहीम हैं तो आदमी हैं राम,

रे अब तो बोल आदमी का आदमी है, आपको सलाम.....–2

पंखों में आकाश समेटे.....

पंखों में आकाश समेटे चले हमारा काफिला,

मन में इक विश्वास संजोए चले हमारा काफिला,चले हमारा काफिला।

नई सोच का नया जोश गर आजाये इन बाहों में,

नई उमंगें, नई रवानी रम जाये इन श्वासों में,रम जाये इन श्वासों मे,

नये स्वपन की धड़कन लेकर चले हमारा काफिला,

मन में इक विश्वास संजोये चले हमारा काफिला, चले हमारा काफिला।

पंखों में आकाश समेटे.....

श्रम की पूजा करने वाले निश्चित पा जाते मंजिल,

फौलदी गर बनें इरादे कोई काम नही मुश्किल, कोई काम नही मुश्किल,

रंगों का इक इन्द्र धनुष ले चले हमारा काफिला,

मन में इक विश्वास संजोए,चले हमारा काफिला, चले हमारा काफिला।

पंखों में आकाश समेटे.....

नील गगन में उड़ने वाले पंछी नया सवेरा है,

बरसे मोती आंगन–आंगन पल–पल रुप सुनहरा है, पल–पल रुप सुनहरा है,

नूतन मृदु उल्लास लिये अब चले हमारा काफिला,

मन में इक विश्वास संजोए चले हमारा काफिला, चले हमारा काफिला।

पंखों में आकाश समेटे चले हमारा काफिला,

मन में इक विश्वास संजोए चले हमारा काफिला, चले हमारा काफिला।

अब तो मजहब कोई ऐसा.....

अब तो मजहब कोई ऐसा भी चलाया जाए,

जिसमें हर इंसान को इंसा बनाया जाए।

आग बहती है यहां गंगा में भी झेलम में भी–2

कोई बतलाये कहां जाकर नहाया जाए,

जिसमें हर इंसान को..... ।

जिसकी खुशबू से महक उठे पड़ौसी का भी घर–2

फूल ऐसा अपनी बगिया में खिलाया जाए,

जिसमें हर इंसान को..... ।

प्यार का खूं क्यों हुआ है ये समझने के लिए–2

हर अंधेरों को उजालों में बुलाया जाए,

जिसमें हर इंसान को..... ।

तेरे दुःख और दर्द का मुझ पर भी ऐसा असर–2

तू रहे भूखा तो मुझसे भी न खाया जाए,

जिसमें हर इंसान को..... ।

जिस्म चाहे दो हो लेकिन दिल तो अपने एक हैं–2

तेरा आंसू मेरी पलकों से उठाया जाए,

जिसमें हर इंसान को..... ।

अब तो मजहब कोई ऐसा भी चलाया जाए,

जिसमें हर इंसान को इंसा बनाया जाए।

शपथ लेना तो सरल है पर निभाना ही कठिन है,
सधना का पथ कठिन है, साधना का पथ कठिन है–2

है अचेतन जो युगों से लहर के अनकूल बहते–2
साथ बहना है सरल प्रतिकूल बहना ही कठिन है,
साधना का पथ कठिन है, साधना का पथ कठिन है।

शलभ बन जलना सरल है दीप की जलती शिखा पर–2
स्वयं को तिल–तिल जला कर, दीप बनना ही कठिन है,
साधना का पथ कठिन है, साधना का पथ कठिन है।

शपथ लेना तो सरल है पर निभाना ही कठिन है,
सधना का पथ कठिन है, साधना का पथ कठिन है–2

सौ में सत्तर आदमी जब.....

सौ में सत्तर आदमी फिलहाल जब नाशाद है,

दिल पर रख कर हाथ कहिये देश क्या आजाद है,

सौ में सत्तर आदमी.....

कोठियों से मुल्क की मैय्यार को मत आंकिये,

असली हिन्दुस्तान तो फुटपाथ पर आबाद है,

सौ में सत्तर आदमी.....

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेंरा मकसद नही,

मेरा मकसद है कि ये सूरत बदलनी चाहिये,

सौ में सत्तर आदमी.....

एक चिंगारी कही से ढूंढ लाआं दोस्तों,

इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है,

सौ में सत्तर आदमी.....

मेरे सीने में नही तो तेरे सीने में सही,

हो कही भी आग लेकिन आग जलनी चाहिये,

सौ में सत्तर आदमी.....

जो मिटा पाया न अब तक भूख के अवसाद को,

दफन कर दो आज उस मफलूस पूंजीवाद को,

सौ में सत्तर आदमी फिलहाल जब नाशाद है

दिल रखकर हाथ कहिये देश क्या आजाद है

घर–घर अलख जगाएंगे.....

घर–घर अलख जगायेंगे बदलेंगे जमाना–2

निश्चय हमारा ध्रुव सा अटल है,

काया की रग–रग में निष्ठा का बल है,

जागृति शंख बजायेंगे बदलेंगे जमाना।

घर–घर अलख.....

बदली है हमने अपनी दिशाएं,

मंजिल नई तय करके दिखाएं,

धरती को स्वर्ग बनाएंगे जमाना।

घर–घर अलख.....

श्रम से बनाएंगे माटी को सोना,

जीवन बनेगा उपवन सलोना,

मंगल सुमन खिलाएंगे बदलेंगे जमाना।

घर–घर अलख.....

कोरी कल्पना की तोड़ेंगे कारा,

ममता की निर्मल बहाएंगे धारा,

समता के दीप जलाएंगे बदलेंगे जमाना।

घर–घर अलख जगाएंगे बदलेंगे जमाना–2

मैं तुमको विश्वास दूं तुम मुझको.....

मैं तुमको विश्वास दूं, तुम मंझको विश्वास दो,

शंकोओं के सागर हम लंग जायेंगे,

मरुधरा को मिलकर स्वर्ग बनायेंगे–2

मैं तुमको विश्वास दूं, तुम.....

प्रेम बिना यह जीवन तो अनजाना है,

सब अपने है कौन यहां बेगाना है,

हर पल अपना अर्थवान बनजायेगा,

बस थोड़ासा मन में प्यार जगाना है,

इस जीवन को साज दो, मौन नही आवाज दो,

पाषाणों मीठी प्यास जगायेंगे, मरुधरा को मिलकर स्वर्ग बनायेंगे।

मैं तुमको विश्वास दूं, तुम.....

अलगावों से आग सुलगने लगती है,

उपवन की हर साख झुलसने लगती है,

हर आंगन में सिर्फ सिसकियां उठती हैं,

संबंधों की सांस उखड़ने लगती है,

द्वेष भाव को त्याग दो बस सब को अनुराग दो,

सन्नाटों में हम सरगम बनजायेंगे मरुधरा को मिलकर स्वर्ग बनायेंगे।

मैं तुमको विश्वास दूं, तुम.....

ढूंढ सको तो हर माटी में सोना है,

हिम्मत का हथियार नहीं बस खोना है,

मुस्का दो तो हर मौसम मस्ताना है,

बीत गया जो समय उसे क्या रोना है,

लो हाथों में हाथ लो, इक दूजे का साथ दो,

इस धरती का सोया प्यार जगायेंगे, मरुधरा को मिलकर स्वर्ग बनायेंगे।

तुम मुझको विश्वास दो, मैं तुमको विश्वास दू.....

चलो के तेज हम चले.....

चलो कि तेज़ हम चलें कि चलने का आगाज़ है]

चलो कि तेज़ बढ़ चलें कि हम सभी जो साथ हैं]

चलो कि रास्तो को अब हमारा ही हैं इंतज़ार]

चलो कि अब चल ही दें भूल के ये जीत हार]

कहाँ हमें पड़ी है मंजिलो को पा ही जाने की]

कहाँ हमें पड़ी है ये शोहरतें बखाने की]

हम तो बस साथ चलके साथ को निभाएंगे]

हम सभी की शक्ति हम ये बात ही दोहराएंगे

चलो कि तेज़ हम चलें कि चलने का आगाज़ है]

चलो कि तेज़ बढ़ चलें कि हम सभी जो साथ हैं]

चलो कि रास्तो को अब हमारा ही हैं इंतज़ार]

चलो कि अब चल ही दें भूल के ये जीत हार]

भौतिको को भूल कर साथ चलते जायेंगे]

एक हसीं की लालसा में ज़िन्दगी लुटाएंगे

चलो कि तेज़ हम चलें कि चलने का आगाज़ है]

चलो कि तेज़ बढ़ चलें कि हम सभी जो साथ हैं]

चलो कि रास्तो को अब हमारा ही हैं इंतज़ार]

चलो कि अब चल ही दें भूल के ये जीत हार!!

लेखिका– शिवानी शर्मा (गांधी फेलो, कैवल्या एजूकेशन फाउन्डेशन)

मजदूर तेरी छान में

ये किसने लूट मचाई मजदूर तेरी छान में–2
मजदूर तेरी छान में किसान तेरी छान में
ये किसने.....

01. पूंजीपति के कोठे बंगले ऊंची महल अटारी क्यों?
छान टूट रही, फूंस बिखर रहा एसी तुम्हारी हालत क्यों?
और टूटी चार पाई मजदूर तेरी छान में
ये किसने.....

02. पूंजीपति के शादी में यहां आतिश बाजी छूट रही–2
कुत्ते भी खा रहे मिठाई दस बारह दिन लूट रही,
पर तूने ना रोटी खाई मजदूर तेरी छान में
य किसने.....

03 पूंजीपति के देखो अब तो घर पे डॉक्टर आता है–2
तेरा बालक बीमार हो कर तडफ–तडफ मर जाता है,
पर मिलती नही दवाई मजदूर तेरी छान में
ये किसने.....

किसी के काम जो आए.....

किसी के काम जो आए उसे इन्सान कहते हैं

पराया दर्द अपनाए उसे इन्सान कहते है।

कही धनवान है इतना कही इन्सान निर्धन है,
कभी दुख है कभी सुख है इसी का नाम जीवन है।
जो मुस्किल से ना घबराए उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द.....

ये दुनियां एक उलझन है कही धोख कही ठोकर
कोई हस.हस के जीता है कोई जीता है रो रोकर,
जो गिरकर फिर संभल जाए उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द.....

मशालें ले कर चलना.....

मशालें ले कर चलन, जबतक रात बाकी है,

संभल कर हर कदम रखना, जब तक रात बाकी है

मशालें ले कर.....

मिले मंसूर को सूली, जहर सुकरात के हिस्से,

रहेगा जुर्म सच कहना जब तक रात बाकी है,

मशालें ले कर चलना.....

पसीने की तो तुम छोड़ो, लहू मजदूर का यारों,

सस्ता पानी से रहेगा, जब तक रात बाकी है,

मशालें ले कर चलना.....

जब तक रहेंगे सवार, हर महफिल पे उल्लू ही,

पपीहे की सुनेगा कौन, जब तक रात बाकी है,

मशालें ले कर चलना.....

झुका सर को तू मंदिर में, या मस्जिद में तू कर सजदा,

तेरे गम ना होंगे कम जब तक रात बाकी हैं,

मशालें ले कर चलना.....

तेरे मस्तक होगा हर पल विद्रोह का निशां,

नही ये जोश कम होगा जब तक रात बाकी है,

मशालें ले कर चलना.....

अंधेरों की अदालत में है क्या फरियाद का फायदा,

तू कर संग्राम ऐ साथी जब तक रात बाकी है,

मशालें ले कर चनला जब तक रात बाकी है,

संभल कर हर कदम रखना जब तक रात बाकी है, मशालें ले कर चनला।

हर पल आगे बढ़ना है.....

हल चलों से आगे हम, सूरज चांद सितारे हैं.....2

हर पल आगे बढ़ते हैं हम हर पल आगे बढ़ते हैं.....2

नित्य गगन में झूम–झूम कर, अपनी मंजिल चुनते हैं,

आंधी तूफानों के भंवर में, अपनी राह बनाते हैं,

अपनी राह बनाते हैं, अपनी राह बनाते हैं

हर पल आगे बढ़ते हैं हम हर पल आगे बढ़ते हैं।

खेतों की हरियाली हैं हम,अपने देश की शान हैं,

अपनी मुट्ठी में बंद रखते आंधी और तूफान हैं,

आंधी और तूफान हैं, आंधी और तूफान हैं

हर पल आगे बढते हैं हम हर पल आगे बढ़ते हैं।

वक्त की टिक–टिक से पहले हम अपना कदम बढ़ा देते,

हम सजग और आत्म–निर्भर यही हमारी पहचान हैं,

यही हमारी पहचान हैं, यही हमारी पहचान हैं

हर पल आगे बढ़ना है हर पल आगे बढ़ना है।

सागर से भी गहरे हैं हम, नभ जैसा विस्तार हैं,

हम तो हैं गंगा यमुना, जहां सबका सत्कार हैं

जहां सबका सबका सत्कार है, जहां सबका सत्कार है,

हर पल आगे बढ़ते हैं हम हर पल आगे बढते हैं

अपनी मंजिल चुनते हैं हम अपनी अपनी मंजिल चुनते हैं।

यशस्वी (गांधी फैलो–4, अहमदाबाद)

कदम अपना आगे बढ़ाता.....

कदम अपना आगे बढ़ाता चलाजा–2

सदा प्रेम के गीत गाता चलाजा–2

कदम अपना.....

तेरे मार्ग में वीर कांटे बड़े हैं, लिए तीर हाथों में बैरी खड़े हैं,

युवा वीर सबको मिटाता चलाजा

कदम अपना आगे.....

भले आज तूफान उठकर के आएं , बला पर चली आ रही हो बलाएं,

बहादुर तू दनदनाता चलाजा

कदम अपना.....

जो बिछड़े हुए हैं उन्हें तू मिलाजा, जो सोए हुए हैं उहें तू जगाजा,

तू आनन्द डंका बजाता चलाजा

कदम अपना आगे बढ़ाता चलाजा,

सदा प्रेम के गीत गाता चलाजा,

कदम अपना आगे बढ़ाता चलाजा।

तनूश्री, गांधी फैलो–5, (अहमदाबाद)

બાળગીત – પીળા પતંગીયાની પાંખો

પેલા પીળા પતંગીયાની પાંખો,

એની ગોળ જીણી આંખો (2)

એ તો ફર ફર ઉડતુ જાય...

એ તો સૌને ઉડાડતુ જાય.

પેલા પીળા.....

પેલા સામેના ઉપવનમાં બેઠુ છે એક હરણુ,

એ તો દડબડ દોડતુ જાય...

એ તો સૌને દોડાવતુ જાય.

પેલા પીળા.....

પેલા સામેના ઉપવનમાં બેઠો છે એક મોરલો,

એ તો થનગન નાચતો જાય...

એ તો સૌને નચાવતો જાય.

પેલા પીળા.....

પેલા સામેના ઉપવનમાં બેઠી છે કોયલરાણી,

એ તો ગીતમધુરા ગાય...

એ તો સૌને ગવડાવતી જાય.

પેલા પીળા.....

બાળગીત – અમે ગોવાળીયા

અમે ગોવાળીયા (2)
માથે બાંધ્યા ફાળિયા (2)
લાકડી લઈને અમે ખેતરે ગ્યા'તા,
ગાયો ચરાવતા (2)
હિ.....હિ.....
અમે ગોવાળિયા (2)
માથે બાંધ્યા ફાળિયા (2)
લાકડી લઈને અમે ખેતરે ગ્યા'તા,
સાથે બેસી જમતા (2)
છાશ અને રોટલો (2)
હો.....યા.....
અમે ગોવાળિયા (2)
માથે બાંધ્યા ફાળિયા (2)
લાકડી લઈને અમે ખેતરે ગ્યા'તા,
ચકલા ઉડાડતા (2)
ફર.....ફર..... (2)
અમે ગોવાળિયા (2)
માથે બાંધ્યા ફાળિયા (2)
સાંજે ઘરે આવતા (2)
સાથે બેસી જમતા (2)
દુધ અને રોટલો (2)
હો.....યા.....
અમે ગોવાળિયા

लकड़ी की काठी.....

लकड़ी की काठी काठी पे घोड़ा,

घोड़े की दुम पे जो मारा हथौड़ा,

दौड़ा–दौड़ा–दौड़ा घोड़ा दुम उठा के दौड़ा

तब्बक–तब्बक, तब्बक–तब्बक,

लकड़ी की काठी..... ।

घोड़ा था घमण्डी पहुंचा सब्जी मंडी,

सब्जी मंडी बर्फ पड़ी थी,घोड़े को लग गई ठंडी,

दौड़ा–दौड़ा–दौड़ा घोड़ा दुम उठा के दौड़ा,

तब्बक–तब्बक, तब्बक–तब्बक,

लकड़ी की काठी..... ।

घोड़ा अपना तगड़ा है, देखो कितनी चर्बी है,

चलता है मैरूनी में पर घौड़ा अपना अर्बी है,

दौड़ा–दौड़ा–दौड़ा घोड़ा दुम उठा के दौड़ा,

तब्बक–तब्बक, तब्बक–तब्बक,

लकड़ी की काठी..... ।

घोड़ा पहुंचा चौक में, चौक में था नाई,

नाई ने घोड़े की हमाजमत जो बनाई,

दौड़ा–दौड़ा–दौड़ा घोड़ा दुम उठा के दौड़ा,

तब्बक–तब्बक, तब्बक–तब्बक,

लकड़ी की काठी काठी पे घौड़ा घैड़े की दुम पे जो मारा हथौड़ा,

दौड़ा–दौड़ा–दौड़ा घोड़ा दुम उठा के दौड़ा,

तब्बक–तब्बक, तब्बक–तब्बक।

मामाजी के घर बिलैय्या.....

छोटे मामाजी के घर एक मोटी सी बिलैय्या रे,

जिसके छोटे–छोटे कान, जिसकी मोटी– मोटी आंख,

एक लम्बी पूंछैय्या रे,

छोटे मामाजी के घर..... ।

चौके में जाती, दूध दही खाती,

चाटे मलैय्या रे,

छोटे मामाजी के घर..... ।

कोने में दुबकी, चूहे की ताक में,

भागे दुबैय्या रे,

छोटे मामाजी के घर एक मोटी सी बिलैय्या रे,

जिसके छोटे–छोटे कान, जिसकी मोटी– मोटी आंख,

एक लम्बी पूंछैय्या रे,

छोटे मामाजी के घर..... ।

नानी तेरी मोरनी को.....

नानी तेरी मोरनी को मोर ले गये,

बाकी जो बचा था काले चोर ले गये।

खाके पीके मोटे होके चोर बैठे रेल में,

चोरों वाला डिब्बा कटके सीधा पहुंचा जेल में।

नानी तेरी मोरनी को..... ।

उन चोरों की खूब खबर ली मोटे थानेदार ने,

मोरों को भी खूब नचाया जंगल की सरकार ने,

नानी तेरी मोरनी को..... ।

अच्छी नानी प्यारी नानी रूसा–रूसी छोड़ दे,

जल्दी से इक पैसा दे दे तू कंजूसी छोड़ दे,

नानी तेरी मोरनी को मोर ले गये,

बाकी जो बचा था काले चोर ले गये।

इन्दर राजा पानी दे.....

मेंढ़या ऊपर मेह झडूके करे बादळा शोर,

बज्यो धमेड़ो रामजी रो गगन मढ़यो घणघोर,

भई इन्दर राजा पानी दे, पानी दे गुड़धाणी दे,

मींढ की रो ब्याह करा, अन्न धन रा भण्डार भरा,

बरस बादळी बरस बला, गरड़–गरड़ तेरा बोल भला,

बोल भला भई बोल भला,

अऽऽऽऽऽ रऽऽऽऽऽ..... ।

गीली पाळ तळाव की रै मंगळ्यो काको रपट्यो

तीन कूकर्यां घर में घुस गई, छोरा मांगै लपटो,

भई इन्दर राजा पानी दे, पानी दे गुड़धाणी दे,

मींढ की रो ब्याह करा, अन्न धन रा भण्डार भरा,

बरस बादळी बरस बला, गरड़–गरड़ तेरा बोल भला,

बोल भला भई बोल भला,

अऽऽऽऽऽ रऽऽऽऽऽ..... ।

हरिया– हरिया डूंगरां पै, पवन जबळक्या ले,

गायां रा गुवाळ भीगै समदर लहरां ले,

भई इन्दर राजा पानी दे, पानी दे गुड़धाणी दे,

मींढ की रो ब्याह करा, अन्न धन रा भण्डार भरा,

बरस बादळी बरस बला, गरड़–गरड़ तेरा बोल भला,

बोल भला भई बोल भला, अऽऽऽऽऽ रऽऽऽऽऽ.....

कागज़ की गुड़िया के कान.....

कागज़ की गुड़िया के कान नही है,

गुड़िया कैसे सुनेगी, गुड़िया कैसे सुनेगी ?

खरगोश के कान लगाकर ऐसे सुनेगी– गुड़िया ऐसे सुनेगी।

कागज़ की गुड़िया के हाथ नही है,

गुड़िया कैसे खेलेगी, गुड़िया कैसे खेलेगी ?

स्प्रिंग के हाथ लगाकर ऐसे खेलेगी– गुड़िया ऐसे खेलेगी।

कागज की गुड़िया के पैर नही है,

गुड़िया कैसे कूदेगी– गुड़िया कैसे कूदेगी ?

बंदर के पैर लगाकर ऐसे कूदेगी–गुड़िया ऐसे कूदेगी।

कागज की गुड़िया के दांत नही है,

गुड़िया कैसे खायेगी– गुड़िया कैसे खायेगी ?

शेर के दांत लगाकर ऐसे खायेगी, गुड़िया ऐसे खायेगी।

ऐसे खायेगी, गुड़िया ऐसे खायेगी।

बागों में फूल खिले.....

बागों मे है फूल, देखो कितने फूल खिले,

तितली रानी आओ–आओ, तितली रानी आओ–आओ,

सुन–सुन भँवरा आया, गुन–गुन भँवरा,

गुन–गुन भँवरा आया, गुन–गुन भँवरा आया,

बागों में है..... /

कोयल रानी तुम भी आओ–2 मीठा अपना गीत सुनाओ,

मीठा अपना गीत सुनाओ, मीठा अपना गीत सुनाओ,

बागों में है..... /

हाथी राजा तुम भी आओ–2 धम्मक–धम्मक तुम भी आओ,

धम्मक–धम्मक तुम भी आओ, धम्मक–धम्मक तुम भी आओ,

बागों में है..... /

मोर राजा तुम भी आओ–2 ठुमक–ठुमक कर नाच दिखाओ,

ठुमक–ठुमक कर नाच दिखाओ, ठुमक–ठुमक कर नाच दिखाओ,

बागों में है.....

आसमान को हरा बना दे.....

आसमान को हरा बना दे, धरती नीली पेड़ बैंगनी,

गाड़ी ऊपर नीचे लाला, फिर क्या होगा गड़बड़ झाला,

ढिनचुक, ढिनचुक, ढिनचुक, ढिन,

ढिनचुक, ढिनचुक, ढिनचुक, ढिन।

कोयल के सुर मेंढ़क बोले, उल्लू दिन में आंखें खोले–2

अन्दर चाबी बाहर ताला, फिर क्या होगा गड़बड़ झाला,

ढिनचुक, ढिनचुक, ढिनचुक, ढिन,

ढिनचुक, ढिनचुक, ढिनचुक, ढिन।

दादा मांगे दांत हमारे, रसगुल्ले हो खूब करारे–2

बरफी में हो गरम मसाला, फिर क्या होगा गड़बड़ झाला,

ढिनचुक, ढिनचुक, ढिनचुक, ढिन,

ढिनचुक, ढिनचुक, ढिनचुक, ढिन।

दूध गिरे बादल से भाई, तालाबों में पड़ी मलाई–2

सागर मीठा चंदा काला फिर क्या होगा गड़बड़ झाला,

ढिनचुक, ढिनचुक, ढिनचुक, ढिन,

ढिनचुक, ढिनचुक, ढिनचुक, ढिन।

कि जैसे चांद आकर.....

कि जैसे चांद आकर चांदनी के फूल बरसाता,

कि जैसे मेघ आ सबके घड़ों में नीर भर जाता,

करें वैसे ही हम मेंहनत संवाऱें रुप दुनियां का–3

कि जैसे भोर का सूरज धरा में रंग भरता है,

कि जैसे फूल खिल कर के हवा में गंध भरता है,

करें वैसे ही हम मेंहनत संवाऱें रुप दुनियां का–3

कि जैसे गोद में खेतों का दाना लहलहाता है,

कि जैसे काम मर मजदूर गाना गुनगुनाता है,

करें वैसे ही हम मेंहनत संवाऱें रुप दुनियां का–3

कड़ी मेंहनत से इन्सान का चेहरा चमकता है,

कि सोना आग में तप कर ही कुन्दन सा दमकता है,

करें वैसे ही हम मेंहनत संवाऱें रुप दुनियां का–3

पेड़ लगायें ऐसा.....

पेड़ लगायें ऐसा झिलमिल तारों जैसा,

बिस्किट के हों पत्ते जिसमें,

फल हो टॉफी जैसा,

पेड़ लगायें ऐसा झिलमिल तारों जैसा,

च्विगम जैसा गोंद भी निकले,

शकरकंद सी जड़ हो,

डाल पकड़ कर अगर हिलाएं,

टप–टप बरसे पैसा,

पेड़ लगायें ऐसा झिलमिल तारों जैसा,

डाल तोड़कर दूध निकालें,

फिर पूरा पी जायें,

मक्खन बर्फी दही जमा के,

सब बच्चें खा जायें,

रात अंधेरे में जो चमके,

लगे सितारों जैसा,

पेड़ लगायें ऐसा झिलमिल तारों जैसा ।

रामू जंगल में गया.....

रामू जंगल में गया वहां देखा इक तोता,

रिमझिम–रिमझिम पानी बरसे,

वा भई, वा भई कहता।

नदी किनारे थी इमली उस पर रहती थी तितली–2

तितली ने चूहे को पीटा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ घर से बाहर घसीटा,

रिमझिम रिमझिम पानी बरसे वा भई वा भई कहता,

रामू जेगल में गया वहां देखा इक तोता,

रिमझिम–रिमझिम पानी बरसे,

वा भई, वा भई कहता।

उड़ती हुई इक ढोलक आई तितली ने झट आंख लड़ाई–2

बैठ गई वो झट से ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ पहुंच गई वो नभ में

रामू जेगल में गया वहां देखा इक तोता,

रिमझिम–रिमझिम पानी बरसे,

वा भई, वा भई कहता।

छुइमुई छुइमुई निंदियां....

छुइमुई–छुइमुई आजा निंदिया,

चाँदनी का झूला लेके आजा निंदिया–2

पापा भी सोए, मम्मी भी सोई,

सोए भैया, मैं भी चुप–चुप सोऊँ गुड़िया।

छुइमुई–छुइमुई.....

तारों की बारात है चँदा मामा साथ है,

देखो भैया, मीठी–मीठी बांसुरी बजाए परियाँ।

छुइमुई–छुइमुई आजा निंदिया,

चाँदनी का झूला लेके आजा निंदिया–2

झोंपड़ी झरनों में बहती.....

कितना मजा आत अगर दुनियां ऐसी–वैसी होती,

झोंपड़ी झरनों में बहती, झोंपड़ी झरनों में बहती,

कितना मजा आत..... ।

रेलगाड़ी का कुछ होता नही काम वहां,

घूम आते दुनियां जहां, बिना पैसे दाम वहां,

कितना मजा आत..... ।

घोंसलों में होटल चलते, उल्लू वहां पैप्सी पीते,

चब्बक–चब्बक बच्चे करते, ठुम्मक–ठुम्मक शेर चलते,

कितना मजा आत..... ।

हाथी जहां नाव चलाता, हंस को घुमाके लाता,

कोई पहाड़ी गीत गाता, कितना मजा हाय आता,

कितना मजा आत..... ।

घोड़ा बिना पंख जहां चाँद सितारों तक भी जाता,

मेरी कटी हुई पतंगें, सारी वो मेरे पास लाता,

कितना मजा आत..... ।

एक छोटा सा तोता.....

एक छोटा सा तोता रे नीम के कोटर में,

वह तो रहता अकेला रे नीम के कोटर में,

भोर भये उड़ जाता सांझ ढले घर आता–2

वो तो घूमें जगत भर में नीम के कोटर में,

एक छोटा सा तोता रे..... ।

पानी वो पी आये डुबकी लगा आये,

नदी ओर पोखर में नीम के कोटर में,

एक छोटा सा तोता रे..... ।

लाल मिर्च लाता टमाटर से खाता–2

चट करजाता पल भर में नीम के कोटर में,

एक छोटा सा तोता रे नीम के कोटर में,

वह तो रहता अकेला रे नीम के कोटर में

हरा समंदर.....

हरा समंदर गोपी चंदर बोल मेरी मछली कितना पानी,

इतना पानी, इतना पानी, इतना पानी, इतना पानी,

(कमर तक)

काली मछली नीली मछली, मछली–2 सुंदर है,

आँख है जिसकी मोती जैसी, झिलमिल–झिलमिल करती है।

हरा समंदर गोपी चंदर.....

(सीने तक)

मछनी कितनी सुन्दर है, पानी में वो रहती है,

शीप के मोती खाती है परियों जैसी लगती है।

हरा समंदर गोपी चंदर.....

(नाक तक)

सुनहरे पंखों वाली है, चिकने पातों वाली है,

ऊपर नीचे आती है जीभ हमें चिड़ाती है।

हरा समंदर गोपी चंदर.....

(सर से ऊपर)

मोटूराम हलवाई.....

मोटूराम हलवाई भई मोटूराम हलवाई,

खाता खूब मिठाई भाई मोटूराम हलवाई।

मोटूराम को काम न दूजा, दिनभर करता पेट की पूजा,

खाता खूब मिठाई भाई मोटूराम हलवाई,

मोटूराम हलवाई..... ।

मोटूराम जी लड्डू खाते, लड्डू खाते पेड़े खाते,

खाते खूब मलाई भई मोटूराम हलवाई,

मोटूराम हलवाई..... ।

मोटूराम के बेटे चार, दर्जी, धोबी ओर लूहार,

चोथा बेटा नाई भाई मोटूराम हलवाई,

मोटूराम हलवाई..... ।

मोटूराम की पेंट है नीली, सिर पर टोपी पीली–पीली,

बल्ले जैसी टाई भई मोटूराम हलवाई,

मोटूराम हलवाई भई मोटूराम हलवाई,

खता खूब मिठाई भई मोटूराम हलवाई।

गाड़ो जुआर को.....

गड़मच–गड़मच करतो जाय गोड़ो जुआर को,

खड़मच–खडमच करतो जाय गाड़ो जुआर को।

ये कुण भाई बैठ्या जाय, ये कुण भाई ऊबा जाय,

लाडल बाई बैठी जाय, चूदड़ी चमकाती जाय,

गंगा बाई ऊबी जाय, गीत गाळा गाती जाय,

गाड़ो जुआर को,

गड़मच–गड़मच करतो जाय गोड़ो जुआर को,

खड़मच–खडमच करतो जाय गाड़ो जुआर को।

ये कुण भाई मचक्या जाय, ये कुण भाई सूत्या जाय,

जामण जायो मचक्यो जाय, कमर कटारी लटकी जाय,

तुरी कलंगी चिलकी जाय, मूछ्या कै बळ देतो जाय,

गाड़ो जुआर को,

गड़मच–गड़मच करतो जाय गोड़ो जुआर को,

खड़मच–खडमच करतो जाय गाड़ो जुआर को।

बाई रो बाबो सूत्यो जाय, गुड़–गुड़ हुक्को लेतो जाय,

टाबर ने घुड़कातो जाय, खांड–खोपरो खातो जाय,

गाड़ो जुआर को,

गड़मच–गड़मच करतो जाय गोड़ो जुआर को,खड़मच–खडमच करतो जाय गाड़ो जुआर को।

एक बुढ़िया ने बोया दाना.....

एक बुढ़िया ने बोया दाना, गाजर का था पेड़ उगाना,

गाजर हाथों हाथ बढ़ी, थोड़ी–थोड़ी घास बढ़ी,

सोचा तोड़ इसे ले जाऊं, हलवा गरमा–गरम बनाऊं,

खींची चोटी जोर लगाय, ओर लगाया–ओर लगाया,

नही बना भई नही बना, काम हमारा नही बना,

और बुलाओ एक जना,

फिर बुढ़िया का बेटा आया, खींची चोटी जोर लगया,

ओर लगाया– ओर लगाया,

नही बना भई नही बना, काम हमारा नही बना,

और बुलाओ एक जना,

फिर बुढ़िया की बेटी आई, खींची चोटी जोर लगाया,

ओर लगाया–ओर लगाया,

नही बना भई नही बना काम हमारा नही बना,

और बुलाओ एक जना,

फिर बुढ़िया का बुड़ढ़ा आया, खींची चोटी जोर लगाया,

ओर लगाया–ओर लगाया,

बन गया भई बन गया, काम हमारा बन गया।

आओ हम को सब बतलोओ

टेंग टेंग बेंग बेंग, खट्टर खट्टर, फट्टर फट्टर,

आवाजें यह कुछ जानी अन्जानी, और कुछ जानी पहचानी,

गहरा क्यों हैं इतना पानी ? भैंस क्यों खाती है सानी?

अब तो हमें समझाओ नानी, अब तो हमें बतलाओ नानी।

अलख निरंजन बोल बच्चन, 555 और यह बचपन,

अंबानी का रेशम, गांधी की खादी,चमक धमक और जिन्दगी सादी,

बढ़ती कैसे है आखिर आबादी?

अबतो हमें समझाओ दादी, अब तो हमें बतलाओ दादी।

सांठ–गांठ संस्कृत का पाठ, लोगों के बीच क्यों रहती है गांठ,

जय माता उसे कुछ क्यों नहीं आता ? खाने के बाद वो चूरन खाता,

चीनी के बर्तन लकड़ी का फर्निचर, कहां से आया ये शब्द फटीचर,

अब तो हमें समझाओ टीचर, अब तो हमें बतलाओ टीचर।

रात के बाद होता है सवेरा, रात से पहले आता अंधेरा,

सन्नाटे में भी आवाज, सबसे उपर उड़ता बाज,

जीवन की कथा और सच्ची कहानी, चोरों का राजा रूप की रानी,

हाव–भाव भाजी पाव, कहां से आता यह चाव?

नानी दादी टीचर आओ, पापा मम्मी आप भी आओ,

आओ हमको सब समझाओ, आओ हम को सब बतलाओ।

लेखक– मोहम्मद इरफान (गांधी फैलो, अहमदाबाद)

रामूजी की टोपी

रामूजी थे टोपी वाले,टोपी के थे रंग निराले,

बच्चे बूढ़े सब आजाते,जब आजाते टोपी वाले।

अजब–गजब टोपियां लाते,पहन के सबको वो दिखलाते,
काली,पीली, नीली लाल,सब के मन को वो बहलाते,
ट्रींग–ट्रीग, घंटी बजते सब आ जाते,जब आजाते टोपी वाले।

रामूजी थे टोपी वाले.....

सभी टोपियां गोल मटोल,जैसे हो क्रिकेट कि बॉल,
छोटी, बड़ी सभी तरह की, टोपी लगती बड़ी अनमोल,
धूप मेघ में पहन के जाते,खुशियां बांटे टोपी वाले,

रामूजी थे टोपी वाले.....

लेखिकाः सोनल चौधरी

(गांधी फेलो, अहमदाबाद)

जीरा भात

लिट्टी चोखा जीरा भात, अरे लिट्टी चोखा जीरा भात
लल्लू राम की आई बारात,

चलो–चलो सब दावत में,

लिट्टी चोखा जीरा भात।

लल्ली बैठी है सज–धज के

जैसे खिली हो चांदनी रात,

लल्लू आया बैठ घोड़ी पे,

ले जाने दुल्हनियां साथ,

लिट्टी चोखा जीरा भात, लल्लू राम की आई बारात.....

दावत में है खूब मिठाई,

लड्डू बरफी, रसमलाई,

पूरी–सब्जी, भजिया भाई,

मामा, मामी, चाचा, चाची,

सब ने मिलकर जमकर खाई।

लिट्टी चोखा जीरा भात, लल्लू राम की आई बारात.....

ऐसी धूम मनाई शादी, जैसे मिली हमें आजादी,

लल्ली की हुई ऐसी विदाई

लल्लू राम जी खुश होकर,

चले थामें लल्ली का हाथ,

लिट्टी चोखा जीरा भात।

लेखिका : सोनल चौधरी (गांधी फैलो अहमदाबाद)

Hands on my hands…….

Hand's on my hands, what is this here?

This is my haed thinker Mummy my dear,

Head thinker, nicky-nicky nose,

This is what they teach me when I go to school.

Hand's on my hands, what is this here?

This my eye sear Mummy my dear'

Eye sear, head thinker, nicky-nicky nose,

This is what they teach me when I go to school.

Hand's on my hands, what is this here?

This is my nose smeller Mummy my dear.

Nose smeller, eye sear, head thinker nicky-nicky nose,

This is what they teach me when I go to school.

Hand's on my hands, what is this here?

This is my mouth eater, Mummy my dear,

Mouth eater, nose smeller, eye sear, head thinker nicky-nicky nose,

This is what they teach me when I go to school.

Hand's on my hands, what is this here?

This my bread basket,

This is knee knocker,

This is my foot waker

Nicky-nicky nose, this is what they teach me when I go cchool,

Hand's on my hands.

A little teapot………

I am a little teapot,

Short and shout,

Here is my handle,

And here is my spout,

When you want a cup of tea,

Please don't shout,

Just lift me up and pour me out,

I am a little teapot.

Elephant……

Elephant is so big,

Elephant is so fat,

He walks like this,

He walks like that,

He has no finger,

He has no toes,

Oh! My goodnees,

What is the big nose?

Elephant is so big.

Rain on the green grass…….

Rain on the green gras,

Rain on the tree,

Rain on the house top,

But not, but not,

But not on me,

Rain on the green grass.

Head and shoulders*……*

Head and shoulder knees and toes,

Knees and toes, knees and toes-2

And eyes, and ears,

And mouth and nose,

Head and shouldr knees and toes,

Knees and toes, knees and toes-2

Mulberry bush……

Here we go roud the mulberry bush,

Early in the morning-2

This is the way we brush our teeth, erarly in the morning,

Here we go……..

This is the way we wash our face, early in the morning,

Here we go…….

This is the way we comb our face, early in the morning,

Here we go…….

This is way we eat our breakfast, early in the morning,

Here we go…….

This is the way we dirink our milk, early in the morning,

Here we go…….

This is the way we walk to school, early in the morning,

Here we go round the mulberry bush

Early in the morning,

Early in the morning.

To be healthy……

To be healthy,

to be healthy,

Remember this things-2

Drink klin water-2

Have good habbits-2

Eat good food,

Eat good food.

Dickey birds……

Two little dickey birds-2

Sitting on a wall,

One named Peater,

One named Poll,

Fly away Peater,

Fly away poll,

Come back Peater,

Come back Poll.

Two little dickey birds,

Sitting on a wall.